UGC Approved Journal No – 40957
(IIJIF) Impact Factor- 4.172
Regd. No. : 1687-2006-2007 ISSN 0974 - 7648

JIGYASA

AN INTERDISCIPLINARY REFEREED RESEARCH JOURNAL

Chief Editor : *Indukant Dixit*

Executive Editor : *Shashi Bhushan Poddar*

Editor
Reeta Yadav

Volume 12 January 2019 No. I

Published by
PODDAR FOUNDATION
Taranagar Colony
Chhittupur, BHU, Varanasi
www.jigyasabhu.blogspot.com
www.jigyasabhu.com
E-mail : jigyasabhu@gmail.com
Mob. 9415390515, 0542 2366370

उदीयमान ज्ञानाधिष्ठित समाज में शिक्षा : अवसर एवं चुनौतिया

डॉ. अनुभा शुक्ला *

प्रसतावना : हमारा देश भारत विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। हम निरंतर नित–नवीन अनुभवों तथा प्रयोगों के दौर से गुजर रहे हैं। संकल्पना है कि हम 'ज्ञानी समाज' के रुप में पूर्णतः अधिष्ठित हो जाएँ। भारत में ज्ञान की परंपरा सदा से ही रही है। वेदों में ज्ञानी समाज की चर्चा भी मिलती है। इसलिए यह 'विश्वगुरु' का गौरव भी प्राप्त कर चुका है। ज्ञानी और ज्ञान का सम्बन्ध धारणा और धारक और की तरह है। ज्ञान ज्ञानियों से ही प्रतिबिम्बित होती है कि ज्ञान आधारित समाज की परिकल्पना इस बात पर आधारित होती है। राष्ट्र अपने ज्ञान की पूँजी को संरक्षित कर अपने समाज के लोगों को सशक्त कर पा रहा है या नहीं। नयी चुनौतियाँ के लिए अपने ज्ञान में कितना नवोन्मेष कर रहा है। नव सृजन की सबल और सरल सम्भावना है या नहीं?

ज्ञानी समाज किसे कहते हैं?

'ज्ञानी समाज' की चर्चा सर्वप्रथम पीटर ड्रकर ने 1969 में की थी जिसका स्वरूप 1990 में स्पष्ट हो पाया था। 'ज्ञानी समाज' (Knowledge Society) से तात्पर्य एक ऐसे समाज से है जिसका सर्वतोमुखी विकास सुनिश्चित हो। 'ज्ञानाधिष्ठित समाज' विकसित तथा विकासशील दोनों समाज के लिए अभीष्ट रहा है। ज्ञानी समाज को एक हितैषी समाज भी कहा जा सकता है। शिक्षा और सृजन, सहयोग और सहभागिता अविरल गति से सबके हितों की रक्षा करता है।

ज्ञानी समाज के लिए ज्ञान एक कवच की तरह होता है जो राष्ट्र के प्रथम व्यक्ति से अन्तिम व्यक्ति की रक्षा करता है, तथा उन्हें विकसित व पुष्ट बनाता है। ज्ञान की श्रृँखला में सभी जन अपनी प्रज्ञा तथा पूरी क्षमता से बड़ी ही सरलता और नमनीयता से जुड़े रहते है, किसी एक की भी छूट जाने की सम्भावना नहीं रहती है। परस्पर सहयोग, सद्भाव तथा सहिष्णुता से एक दूसरे को पल्लवित और पुष्पित करते हैं। ज्ञान की प्रक्रिया में धर्म, विज्ञान, साहित्य, कला, संगीत, गणित तथा विविध विधाओं का योगदान होता है। ज्ञानी समाज के लिए पूर्व में प्राप्त ज्ञान का अक्षुण्ण भण्डार जितना ठोस आधार प्रदान करता है उतना ही नवीन विचार तथा पद्धतियाँ और सिद्धान्त भी उसे प्रगतिशील बनाता है। ज्ञानी समाज में प्रत्येक क्षेत्र की उपादेयता बनी रहती है।

ज्ञान क्या है?

ज्ञान के विविध रूप देखने को मिलते है। 'ज्ञान' को मनुष्य के समस्त सुखों का आधार कहा गया है। गीता में 'ज्ञान' की चर्चा भगवान श्रीकृष्ण ने

---

* असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल ऋसह पी.जी. कालेज, सिंगरामऊ, जौनपुर

बार–बार किया है। 'न हि ज्ञानेन सदृश पवित्रमिह विद्यते अर्थात् ज्ञान के सदृश संसार में दूसरा कुछ भी पवित्र नहीं है। वर्तमान समय को ज्ञान का युग कहा जाने लगा है क्योंकि अब जन–जागृति आ चुकी है। केवल जानना ही पर्याप्त नहीं बल्कि, उसमें निहित सत्य तत्व को जानना भी आवश्यक है। जो सत्य है वही ज्ञान है। ज्ञान और सत्य दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ज्ञान को मनुष्य का तृतीय नेत्र भी कहा गया है। 'ज्ञानं मनुजस्य तृतीयं नेत्रं'। ज्ञान ही विश्व के सभी रहस्यों को प्रकाशित करता है। दुविधा, भ्रम, संशय तथा अज्ञानता को नष्ट कर समस्त जीवों का कल्याण करता है। ज्ञान हमेशा से ही विमित्र समाज के अभीष्ट रहा है। सभी द्रुतगति गति से इसकी ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। ज्ञान को विवेक ज्ञान रूप तलवार कहा गया है जिससे अज्ञान जनित संशय का छेदन किया जा सकता है।

तस्मादज्ञानसम्भूत हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत।

अर्थात् श्रीकृष्ण कहते हैं–हे भारतवंशी अर्जुन! तू हृदय में स्थित इस अज्ञान जनित अपने संशय का विवेकज्ञान रूप तलवार द्वारा छेदन करके समत्वरूप कर्मयोग में स्थित हो जा और युद्ध के लिए खड़ा हो जा। गीता में 'समत्व बुद्धि' को ज्ञान का प्रतिरूप कहा गया है और कर्मयोग में स्थित होने का अर्थ है यदि ज्ञानी समाज के प्रत्येक व्यक्ति कर्मयोगी होता है तो इसी में सबका कल्याण छिपा है। ज्ञान से मनुष्य में विवेक शक्ति उदित होती है जो करणीय व अकरणीय में भेद कर सदैव अभीष्ट कर्मों की ओर मानव मन को प्रवृत्त करती है। मनुष्य के मस्तिष्क का उन्नत विकास ज्ञान से ही होता है। ज्ञान से ही संज्ञान, स्मृति, निरीक्षण, कल्पना, तर्क आदि मानसिक शक्तियाँ उद्धृत होती हैं। भौतिक व आध्यात्मिक दोनों जगत् का ज्ञान होता है। ज्ञान से मनुष्य सभ्यता के उच्च शिखर पर पहुँच कर संस्कृति की रक्षा करता है। ज्ञान मनुष्य में सद्गुणों का संचार करता है। सुकरात ने लिखा है 'One who had the true knowledge could not be other than Virtuous' अर्थात् जिसके पास सच्चा ज्ञान है व सद्गुणी के अलावा कुछ भी नहीं हो सकता है।

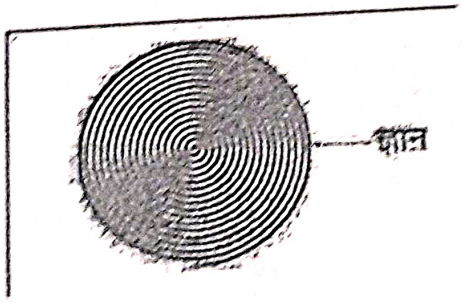

- ज्ञान एक चिरन्तन भावभूमि है।
- ज्ञान स्वतः स्फूर्त तथा स्वतः प्रकाश्य है।
- यह इन्द्रियातीत है।
- यह निर्वचनीय है।

ज्ञान को न इन्द्रियों से देखा जा सकता है न छुआ जा सकता है। न भिगोया जा सकता है न उसे छोटा–बड़ा किया जा सकता है। ज्ञान की अनुभूति जब भी व्यक्ति के अन्दर बनता है तो टुकड़े–टुकड़े होकर नहीं युगों–युगों तक पूर्णरूपेण ही रहता है। ज्ञान किसी की भाँति नहीं होता। यह हो सकता है कि व्यक्ति पहले अपने चित्तवृत्तियों को व्यवस्थित व अनुशासित बनाए, इसमें पूर्णता आते ही ज्ञान का सर्जन हो जाता है। ज्ञान अनुभवपूर्ण, इन्द्रीयातीय एवं स्थायी हो जाता है। ज्ञानी को कुछ अभाव नहीं रह जाता है। वह सभी का सब कुछ दे सकता है। यही कारण है कि दुनिया के अभावग्रस्त लोग अपनी अभाव की पूर्ति एवं तृप्ति के लिए ज्ञान सिद्ध पुरुषों के पास जाते है तथा उनकी उदारता से बड़ी–बड़ी बातें हो जाती है। ज्ञानी समाज को भी हम इसी रूप में देख सकते हैं। ज्ञानी समाज में अभावग्रस्तता नहीं होती है बल्कि यह स्वयं ही सम्पूर्ण सुविधाओं का उत्सर्जन करता रहता है।

ज्ञान व सूचना : ज्ञान और सूचना में पर्याप्त अन्तर है। सूचना का आधार भौतिक, पार्थिव, तर्कप्रधान एवं सीमित है, जबकि ज्ञान का आधार अतीन्द्रिय तत्त्वपरक एवं शाश्वत है। यह सही है कि शाश्वत तर्कबोध के लिए शास्त्रार्थ किया जाता है, किन्तु समाप्ति भी अपूर्ण में ही होती है। सूचना ऐन्द्रिय विषयों की होती है। सूचना के लिए कोई सूचक होता है जो सूचनाएँ दे रहा है, वह सही है.या गलत या किसी धोखे के लिए यह तय करना कठिन कार्य है। सूचना का आदि मध्य और अन्त होता है पर ज्ञान हितकर परमपवित्र और उत्थान करने वाला होता है। ज्ञान से कभी धोखा नहीं होता बल्कि परमसत्ता उसे सुधारते भी रहते हैं। ज्ञान हमारे लिए सब तरह से उपादेय है पर सूचना आधी–अधूरी, स्वार्थ से अभिप्रेरित और कालान्तर में अनुपयुक्त हो सकती है। सूचना का आधार ऐन्द्रिक होता है पर ज्ञान अतीन्द्रिय होता है। ऐन्द्रक दृष्टि भ्रामक होती है, उस पर पूर्ण विश्वास नहीं किया जा सकता है। समाज में देखने में आता है कि आये दिन मनुष्यों पर निर्भर होने पर स्वार्थो के टक्कर में शुभ अशुभ में बदल जाता है क्यों? क्योंकि हमने सूचना पर अधिक निर्भरता बरती है।

ज्ञानमार्गी किसी सीमा तक इन्द्रियों और कर्म पर निर्भर रहते हैं यह ज्ञान की प्रारम्भिक स्थिति है जो कालान्तर में सर्वथा अतीन्द्रिय पर निर्भर बन जाती है। सूचना ऐन्द्रिय धरातल पर घटने वाला घटक है पर ज्ञान कभी भी ऐसा करवट नहीं बदलता है। ज्ञान की यह विशेषता है कि वह बार–बार कथन के दौरान श्रोता पर कुछ न कुछ छाप छोड़ता है जबकि सूचना छाप न छोड़कर यह देखती है कि इस सूचना से मेरी स्थिति संतुष्ट होती है या नहीं।

ज्ञानी समाज की विशेषता:

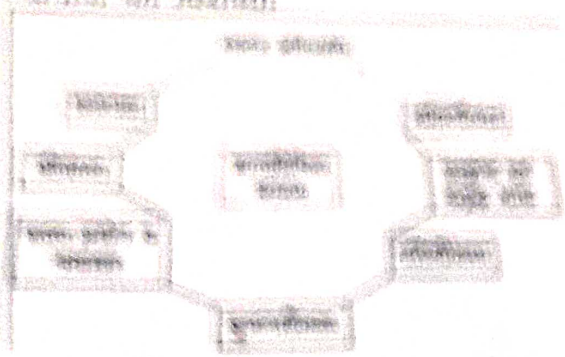

ज्ञानी समाज में स्वतंत्र अभिव्यक्ति व अभिव्यक्तियों की सतत उत्तम तथा समृद्ध भाषा रहती है। इसलिए विकासोन्मुख गतिविधियाँ, शुभकामनाएँ अथवा प्रयोग तथा व्यवहार तथा प्रभावी समय-समय पर परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन भी होता है ताकि भूल से कोई गलत निर्णय में शीघ्रता न हो। सजगता तथा स्वतंत्र विचार अभिव्यक्ति का अवसर बना रहता है।

ज्ञानी समाज के व्यक्ति अपने बच्चों को उपदेश देते रहते हैं कि जीवन अनमोल है। इसका सदुपयोग करो। बड़ा से बड़ा सदुपयोग यही है कि ज्ञान का अनुशीलन करो। फालतू लोगों और बातों से अपने को बचाये रखो। दूसरी ओर भौतिकवादी सांसारिक व्यक्ति अपने बच्चों को ज्ञान-पथ से हटने का आग्रह करता है। उनका तर्क रहता है कि ज्ञान से जीवन की आवश्यकतायें नहीं पूरी हो सकती है। इसलिए उसी मार्ग पर चलो जिससे तुम्हारी आवश्यकतायें पूर्ण हों। बिना कहे ही इस बात को समझिये कि इन दोनों स्थितियों में पहली और आवश्यक संघटन है। जीवन के अंतिम छोर पर पहुँचे हुए से पूछो तो वह यही कहेगा कि ज्ञान पर आचरण की साधना, यही जीवन को बहुमूल्य बनाती है। जो युगों-युगों से अपना अस्तित्व बनाएँ है, उन्हें कभी बूढ़ा नहीं होने देती है कभी मलिन नहीं होने देती है, सदा नित्य नवीन प्रतिभाषित होती रहती है। पढ़ने या श्रवण करने वाले को नई-नई प्रेरणायें प्रदान करती है, समय के मूल्य व महत्त्व समझाती है। जो व्यक्ति या समाज ज्ञान पर आश्रित है वह जीवन के अंतिम छोर पर निराशा, हताशा, ठगा हुआ और दिग्भ्रान्त नहीं पाता है। मन प्रफुल्लित रहता है। जीवन का परिवर्तन मैले वस्त्र को हटाकर नवीन धारण जैसे उत्क्रम की प्रक्रिया है। ज्ञान का दामन सदा थामे रहने की आवश्यकता होती है। ज्ञानदानी बच जाता है जिससे भोगी को खामियाजा भुगतना पड़ता है। ज्ञान बताता है कि जो अध्ययनशील हैं, निरन्तर उनका मनन चिन्तन एवं निदिध्यासन करते रहते हैं वे संसार की उठापटक घटना व प्रभाव से बच सकते हैं।

ज्ञानी समाज में शिक्षा व शिक्षक : उदीयमान ज्ञानी समाज के लिए शिक्षा आवश्यक है, लेकिन चुनौति इस बात की है कि शिक्षक कैसा हो? हम किसे शिक्षा मानें? शिक्षा की व्यवस्था क्या हो? पाठ्यक्रम क्या हो? शिक्षा का अनुशासन कैसा हो ? ऐसे तमाम पक्ष हैं जिस पर बिना सोच-विचार किए

ज्ञानी समाज का निर्माण तो दूर उसके स्वरूप की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

प्रारंभ में शिक्षा केवल अभिजात वर्ग तक ही सीमित थी लेकिन वर्तमान में शिक्षा जनशिक्षा में परिणत हों पूर्वशिक्षा अभियान का रूप ग्रहण कर चुकी है। पाठ्यवस्तु दर्शन, तर्कशास्त्र, धर्मशास्त्र, व्याकरण आदि सैद्धान्तिक विषयों से लौकिक व्यावहारिक व अतिविशिष्ट माँग आधारित विषयों में परिवर्तित हो चुकी है। शिक्षा प्राचीन काल के धर्म आधारित शिक्षा से एक संस्थागत उद्योग, सामाजिक सेवाएं, विशुद्ध लाभ आधारित व्यवसाय में एक स्रोत है। उसे ज्ञान की वृद्धि की गति से तालमेल बिठाना होगा। ज्ञानी समाज को शिक्षा के लिए ज्ञान का प्रतिमान या आदर्श परिभाषित करने होंगे। आदर्श की व्याख्या के साथ–साथ उसके मूल्यांकन के तरीके व तकनीकी भी विकसित करनी होगी। नवाचार व निरत प्रयोग की विधियों का भी विकास करना होगा। विद्यार्थी के सहज विकास के लिए माँ की भाँति सहज शिक्षक बनना होगा। निरन्तर नवाचार एवं सजगता ज्ञानी समाज के शिक्षक का आदर्श है जो विकास का मार्ग है दूसरा मार्ग विकास के विपरीत है। इसके लिए जरूरी है कि शिक्षक–शिक्षा को विद्यालय के यथार्थ के निकट आकर भविष्य के लिए तैयारी करनी होगी। इनटेल (Teacher Reach) लर्नेट एडूकाम, कालजूम आदि साफ्टवेयर बाजार में हैं जिसके निर्मम प्रभाव से विद्यार्थी को बचाना होगा क्योंकि शिक्षक 'आँखों से आँखों के सम्बन्ध' (Eye to Ege Connection) के माध्यम से शिक्षार्थी में मानवीय गुणों का संचार करता है। उसे उत्तम चरित्र का अधिकारी बना देता है। इसके लिए शिक्षक को विभिन्न संस्कृतियों की समझ आवश्यक हैं विशेषतः संप्रेषण व भाषा के संदर्भ में। ज्ञानी समाज का विद्यार्थी अति सजग, टेक्नालॉजी प्रेमी व शीघ्रता प्रिय है। विभिन्न क्षेत्रों का ज्ञान इंटरनेट व एडुसेट के माध्यम से बिखरा पड़ा है। ऐसे में सर्वोत्तम श्रेणी का ज्ञान ग्रहण कराना शिक्षक के लिए कड़ी चुनौती है। शिक्षक की कामयाबी इसी में होगी कि वह ज्ञानी समाज के विद्यार्थी को ज्ञानवान बनाने के लिए सूचना को छाँटना, विश्लेषण करना, व्याख्या करना, वर्गीकरण करना सीखायें इसके साथ ही आध्यात्मिक रूझान वाले तथा स्वयं को जानने वाले विद्यार्थी को विकसित करना होगा। जो विभिन्न तनावों व समस्याओं को ठीक से समझकर उचित निर्णय कर सके। इसके सोच में सकारात्मकता का वास भी हो।

ज्ञानी व समाज में प्रबन्धन हेतु सुझाव : ज्ञानी समाज की अवधारणा विश्व में तेजी से विकसित हो रही है। इस कारण प्रतिस्पर्धा बढ़ गयी है। युवाओं की क्षमताओं एवं योग्यताओं को पहचानना एवं उसका पूरा सदुपयोग भी एक व्यापक चुनौती के रूप में उभरा है। आज जब ज्ञान तेजी से प्रसारित होने लगा है तब उसका कुशल प्रबन्धन भी आवश्यक हो गया है। इसके लिए सामाजिक एवं आर्थिक लक्ष्य निर्धारण के साथ ही विभिन्न विषयगत शोध व शिक्षण विधियों का सर्वोत्तम चुनाव करना होगा। ज्ञान प्रबन्धन के लिए

देश–व्यापी नेटवर्क वाला ढाँचे का प्रारूप भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने उस समय तैयार किया था जब वे भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के रूप में ज्ञान कार्य बल (Task Force) के सदस्य थे। उनके बताए तरीकों को अपनाकर ज्ञानी समाज की उभरती कठिनाइयों को दूर किया जा सकता है। 'ज्ञान आयोग' की संस्तुतियाँ पर भी गौर कर अपनाना होगा। ज्ञान–आधारित सामाजिक व्यवस्था लागू करनी होगी। पूर्णतः रोजगार देना या प्राप्त करना ज्ञानी समाज की उत्तम सामाजिक व्यवस्था नहीं कही जा सकती है। ज्ञानी समाज की सामाजिक व्यवस्था हमेशा मानवीय गुणों एवं संवेदनाओं से परिपूर्ण होती है। रोजगार नहीं सेवाएँ प्रमुख होती है। ज्ञान आधारित सामाजिक व्यवस्था में सूचना नहीं ज्ञान महत्त्वपूर्ण होता है। सूचना को कच्चा माल समझा जाता है और तकनीकी का प्रयोग ज्ञान प्रसारित करने के लिए किया जाता है। सामाजिक व्यवस्था में सुधार से पूर्व शिक्षा व्यवस्था में सुधार अपेक्षित होता है।

ज्ञानी समाज को भ्रमजाल से मुक्त, गतिशील तथा अक्षुण्य बनाने में भाषा भी एक सशक्त माध्यम है। भाषा के माध्यम से ही हम ज्ञान को संरक्षित व्यवस्थित एवं विकसित कर आगामी पीढ़ी तक हस्तांतरित कर सकते है। भाषा हमारे चिंतन का आधार है। संप्रेषण का माध्यम भी है। ज्ञानी समाज का संज्ञानात्मक विकास भाषा के माध्यम से होता है, क्योंकि भाषा ही अस्पष्ट भावना व विचार को स्पष्टता प्रदान करती है जो हमारे संवेग व व्यवहार को ठीक कर सकती है। मनोवैज्ञानिक एरान टी बेक के अनुसार 'संवेग व व्यवहार भी हमारे आंतरिक संभाषण (Dialogue) द्वारा निर्धारित होता है। इन पर नियंत्रण करके अनेक असमान्यता को ठीक किया जा सकता है।' प्रश्न होगा कि क्या भाषायी स्थिति कमजोर होने से ज्ञानी समाज शिथिल हो जाएगा? इसका उत्तर हाँ होगा क्योंकि ज्ञानी समाज भाषा के माध्यम से सांस लेता है। सही व प्रबल भाषा से उसका विकास निर्बाध गति से होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा था– 'भाषा ही किसी जाति की सभ्यता को सबसे अधिक झलकाती है, यही उसके हृदय के भीतरी कल–पूर्जों का पता देती है। किसी जाति को अशक्त करने का सबसे सहज उपाय है उसकी भाषा को नष्ट करना।' ज्ञानी समाज को भौतिकवादी सोच, तनावयुक्त परिवेश तथा शिक्षार्थियों के ग्राहकता के अभाव से बचना होगा। सृजनात्मकता पर बल देना होगा चाहे वह मानवीय क्रिया के किसी भी पक्ष से सम्बन्धित हो। भाव, भाषा, नैतिकता, व्यावहारिकता, साधना, जीवन में कर्मठता, समाज सेवा की भावना व आत्मोद्धार के लिए गीता जैसी सुलभ ग्रन्थ तथा विविध उपनिषद विषयक पुस्तकों का अध्ययन व अध्यापन मुख्य होगा तभी 'ज्ञानी समाज' का उत्कर्ष होगा। आहार–विहार जीवन शैली में सात्विकी प्रधान होगा, तभी ज्ञानी समाज का मुख्य उत्पाद ज्ञान बनेगा तथा विचार दिशा बोध करायेगी। भाषायी व सांस्कृतिक विविधता ज्ञानी समाज का अनिवार्य पक्ष होता है। ज्ञानी पोषित समाज में भाषायी विविधता के औचित्य

पर युवाभारत (1921) में गाँधी जी द्वारा लिखी गयी उक्ति सही रास्ते की ओर इशारा करती है, 'मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर चाहरदीवारी से घेर दिया जाएँ। मैं चाहता हूँ मेरे घर में विभिन्न स्थानों की संस्कृतियाँ उन्मुख रूप से बहें। परन्तु मैं उनके द्वारा पैरों को धरातल से हटाए जानें को अस्वीकार करता हूँ।'

यूनेस्को का प्रतिवेदन यह बात स्वीकार करता है कि यद्यपि 'सूचना समाज' का जन्म हो चुका है किन्तु सही अर्थों में 'ज्ञानी समाज' के जन्म लेने में विलम्ब है। हम 'ज्ञानी समाज' के लिए जब अशिक्षा व लिंगभेद की समस्या से पूरी तरह से छुटकारा दिलाना होगा। 'ज्ञान' को सशक्त हथियार के रूप में अपनाना होगा जो व्यक्तिगत सुरक्षा के साथ सामूहिक सुरक्षा तथा वैश्विक चिन्ताओं तथा समस्याओं से हमारी रक्षा कर सके। नेटवर्क से जुड़ाव' की अपेक्षा हम स्वयं सोचें, तर्क युक्त ढंग से समस्याओं का विश्लेषण करें, मनन करें, नवाचार अपनाएँ तथा स्वतंत्रता की अनुभूति के साथ परिवर्तन और परिशोधन की बात सोचें। आने वाली आवश्यकताओं का संदर्भ ग्रहण करते हुए अध्ययनशील बनें तथा नये परिवर्तन व परीक्षा के लिए सदैव तैयार रहें। विचारों एवं प्रयोगों के सत्यापन के लिए सदा अवसर प्रदान करें। पूर्वाग्रहों की प्रकृति को समझ कर समुचित निदान कर निवृत्ति का मार्ग ढूँढ़ना होगा। शिक्षा के माध्यम से सभी समस्याओं का जड़ पहचानते हुए उसे जड़हीन कर नये 'ज्ञानवृक्ष' का रोपण करना होगा जिसके शीतल छाया में 'ज्ञानाधिष्ठित समाज' की परिकल्पना सार्थक सिद्ध हो सके।

सन्दर्भ :

1. भट्टाचार्य, जी.सी. : 'अध्यापक शिक्षा' विनोद प्रकाशन मन्दिर, आगरा 2005.
2. बाजपेयी, एल.बी. एवं सारस्वत एम. : 'भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्यायें' आलोक प्रकाशन, लखनऊ, 2000.
3. 'ज्ञानामृत', सितम्बर 2010, शान्तिवन 307, 510 आबू।
4. गुप्ता, एम.जी. : 'ज्ञान एवं पाठ्यक्रम' राखी प्रकाशन प्रा.लि., आगरा–2016.
5. जैन, भोला पायल एवं रुहेला : एस.जी, 'पाठ्यक्रम में विषयों की समझ' अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2015
6. 'श्रीमद्भगवद्गीता', गीताप्रेस, गोरखपुर।
7. जिनेन्द्रवर्णी : 'महायात्रा', सर्वसेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 1992.

***